

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 8TH



aglasem.com

Class : 8th

Subject : Social Science

Chapter : 6

Chapter Name : बुनकर, लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक

Q1 यूरोप में किस तरह के कपड़ों की भारी माँग थी?

Answer. यूरोप में छापेदार बारीक सूती कपड़े की भारी माँग थी।

Page : 79 , Block Name : फिर से याद करें

Q2 जामदानी क्या है?

Answer. जामदानी एक तरह का बारीक मलमल होता है जिस पर करघे में सूती और सोने के धागों का इस्तेमाल करके सजावटी चिन्ह बुने जाते हैं। इनका रंग सलेटी और सफ़ेद होता था।

Page : 79 , Block Name : फिर से याद करें

Q3 बंडाना क्या है?

Answer. छापेदार सूती कपड़े को बंडाना कहा जाता था। बंडाना शब्द का इस्तेमाल गले या सिर पर पहनने वाले छापेदार गुलूबन्द के लिए किया जाता था।

Page : 79 , Block Name : फिर से याद करें

Q4 अगरिया कौन होते हैं?

Answer. अगरिया लौह प्रगालकों का समूह था जो लोहा बनाने में माहिर होते थे। ये समूह मध्य भारत के गाँव में रहते थे।

Page : 79 , Block Name : फिर से याद करें

Q5 रिक्त स्थान भरें :

- (क) अंग्रेज़ी का शिन्टज़ शब्द हिंदी के शब्द से निकला है ।
- (ख) टीपू की तलवार स्टील से बनी थी ।
- (ग) भारत का कपड़ा निर्यात सदी में गिरने लगा ।

Answer.

- (क) छींट
- (ख) वुट्ज
- (ग) उन्नीसवीं

Page : 80 , Block Name : फिर से याद करें

Q6 विभिन्न कपड़ों के नामों से उनके इतिहासों के बारे में क्या पता चलता है?

Answer. यूरोप के व्यापारियों ने सूती कपड़ा ईराक के मोसूल शहर में अरब के व्यापारियों के पास देखा था । बारीक बुनाई वाले सभी कपड़ों को वे मस्लिन (मलमल) कहने लगे । पुर्तगाली जब भारत आये तो उन्होंने केरल के तट पर कालीकट में डेरा डाला और यहाँ से सूती कपड़ा अपने साथ ले गए । कालीकट से निकले शब्द के आधार पर सूती कपड़े को कैलिको कहने लगे । छापेदार सूती कपड़े को शिंटज़, कोसा और बंडाना कहा जाता था । अंग्रेज़ी का शिन्टज़ शब्द हिंदी के छींट शब्द से निकला है, छींट रंगीन फूल-पत्ती वाले छोटे छापे के कपड़े को कहा जाता हैं ।

Page : 80 , Block Name : आइए विचार करें

Q7 इंग्लैंड के ऊन और रेशम उत्पादकों ने अठारहवीं सदी की शुरुआत में भारत से आयात होने वाले कपड़े का विरोध क्यों किया था?

Answer. इंग्लैंड में भारतीय कपड़े की लोकप्रियता काफी बढ़ चुकी थी । इंग्लैंड में नए-नए कारखाने खुल रहे थे और अंग्रेज़ कपड़ा उत्पादक चाहते थे कि पूरे इंग्लैंड में केवल उनका कपड़ा ही बिके । इसलिए इंग्लैंड के ऊन और रेशम उत्पादकों ने अठारहवीं सदी की शुरुआत में भारत से आयात होने वाले कपड़े का विरोध किया था ।

Page : 80, Block Name : आइए विचार करें

Q8 ब्रिटेन में कपास उद्योग के विकास से भारत के कपड़ा उत्पादकों पर किस तरह के प्रभाव पड़े?

Answer. ब्रिटेन में सूती कपड़ा उद्योग के विकास से भारत के कपड़ा उत्पादकों पर कई तरह के असर पड़े।

-भारतीय कपड़े को यूरोप और अमरीका के बाज़ारों में ब्रिटिश उद्योग में बने कपड़ों से मुकाबला करना पड़ता था।

-ब्रिटिश सरकार ने भारत से आने वाले कपड़े पर भारी सीमा शुल्क लगा दिया जिससे भारत से कपड़े का निर्यात मुश्किल हो गया।

-इंग्लैंड में बने सूती कपड़े की वजह से भारतीय कपड़े अफ्रीका, अमरीका और यूरोप के बाज़ारों से बाहर हो गए जिससे भारत के कई बुनकर बेरोज़गार हो गए।

-ब्रिटिश और यूरोपीय कंपनियों ने भारतीय माल खरीदना बंद कर दिया।

Page : 80, Block Name : आइए विचार करें

Q9 उन्नीसवीं सदी में भारतीय लौह प्रगलन उद्योग का पतन क्यों हुआ?

Answer. उन्नीसवीं सदी में भारतीय लौह प्रगलन उद्योग के पतन के निम्नलिखित कारण थे –

-पहला कारण नए वन कानून थे। औपनिवेशिक सरकार ने आरक्षित वनों में लोगों के प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी तो कोयले के लिए लकड़ी कहाँ से मिलती?

-कुछ क्षेत्रों में सरकार ने जंगलों में जाने की अनुमति दी लेकिन प्रगालकों को अपनी भट्टी के लिए भारी कर चुकाना पड़ता था जिससे उनकी आय गिर जाती थी।

-भारतीय लुहार घरेलु बर्तन और औज़ार बनाने के लिए ब्रिटेन से आयातित लोहे का इस्तेमाल करने लगे। इस वजह से स्थानीय प्रगालकों द्वारा बनाए लोहे की माँग कम होने लगी।

Page : 80, Block Name : आइए विचार करें

Q10 भारतीय वस्त्रोद्योग को अपने शुरूआती सालों में किन समस्याओं से जूझना पड़ा?

Answer. भारतीय वस्त्रोद्योग को अपने शुरूआती सालों में निम्नलिखित समस्याओं से जूझना पड़ा –

- सबसे पहली समस्या तो यह थी कि इस उद्योग को ब्रिटेन से आये सस्ते कपड़े का मुकाबला करना पड़ा ।
- अधिकतर देशों में सरकार आयातित वस्तुओं पर सीमा शुल्क लगाकर अपने देश में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देती थी लेकिन औपनिवेशिक भारतीय सरकार ने ऐसा कोई कदम नहीं उठाया ।

Page : 80, Block Name : आइए विचार करें

Q11 पहले महायुद्ध के दौरान अपना स्टील उत्पादन बढ़ाने में टिस्को को किस बात से मदद मिली?

Answer.जब पहला विश्व युद्ध शुरू हुआ तो ब्रिटेन में बनने वाले इस्पात को यूरोप में युद्ध संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में झोंक दिया। जिससे भारत आने वाले ब्रिटिश स्टील की मात्रा में भारी गिरावट आयी और रेल की पटरियों के लिए भारतीय रेलवे टिस्को पर आश्रित हो गया । जब युद्ध लम्बा चला तो टिस्को को युद्ध के लिए गोलों के खोल और रेलगाड़ी के पहिये बनाने का काम भी सौंप दिया गया । टिस्को में बनने वाले 90 प्रतिशत इस्पात को सरकार ही खरीद लेती थी और इस तरह टिस्को ब्रिटिश साम्राज्य में इस्पात का सबसे बड़ा कारखाना बन गया ।

Page : 80, Block Name : आइए विचार करें

aglasem.com